प्रकार की निष्काम सेवा करने से भगवत्प्रेम की उच्च अवस्था को प्राप्त होने में सहायता मिलेगी, जिससे जीवन कृतार्थ हो उठता है।

**अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।**
**सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्।।११।।**

**अथ**=यदि; **एतत्**=इसको; **अपि**=भी; **अशक्तः असि**=असमर्थ है; **कर्तुम्**=करने में; **मत्**=मेरे; **योगम् आश्रितः**=भक्तियोग के आश्रित हुआ; **सर्वकर्म**=सब कर्मों के; **फल**=फल का; **त्यागम्**=त्याग; **ततः**=तो; **कुरु**=कर; **यतात्मवान्**=स्वरूप में स्थित।

**अनुवाद**

यदि तू इस बुद्धियोग से युक्त होकर कर्म भी नहीं कर सकता, तो आत्मस्वरूप में स्थित होकर फल का त्याग करता हुआ सब कर्म कर।।११।।

**तात्पर्य**

सम्भव है कि समाज, परिवार या आस्था के कारण अथवा किसी अन्य बाधावश, कोई चाहते हुए भी कृष्णभावना की प्रचार-क्रियाओं से सहयोग भी न कर सके। यदि वह प्रत्यक्ष रूप से कृष्णभावनामय क्रियाओं में तत्पर हो जाय तो बन्धु-बान्धवों का विरोध जैसी कठिनाइयाँ उठ सकती हैं। जिसके साथ ऐसी समस्या हो, उसे चाहिए कि अपने संचित कर्मफल को सत्कर्म में लगाये। वैदिक नियमों में इस प्रकार के अनेक विधान हैं। ऐसे यज्ञों और पुमुन्डी नामक कृत्यों का उल्लेख है, जिनमें पिछले कर्मफल का उपयोग किया जाता है। इससे क्रमशः ज्ञान हो सकता है। देखने में आता है कि कृष्णभावनाभावित सेवाकार्य में लेशमात्र रुचि न रखने वाला मनुष्य भी कभी-कभी औषधालय आदि को दान देकर कर्मफल का त्याग करता है। इसका यहाँ विधान है, अर्थात् ऐसा करना चाहिए , क्योंकि कर्मफल का त्याग करने के अभ्यास से निस्सन्देह शनैः-शनैः चित्त-शुद्धि होती है। फिर चित्त की शुद्धावस्था में कृष्णभावना के माधुर्य के आस्वादन की योग्यता आ जाती है। यह अवश्य है कि कृष्णभावना किसी अन्य उपचारोपाय पर निर्भर नहीं करती, कृष्णभावना चित्त का मार्जन करने में स्वयं पूर्ण समर्थ है। परन्तु यदि कृष्णभावना के पथ में अन्य प्रतिबन्ध आयें तो कर्मफल-त्याग का अभ्यास करे। समाजसेवा, जातिसेवा, राष्ट्रसेवा आदि सब कर्म किए जा सकते हैं; पर इन्हें निष्काम भाव से ही करे, जिससे एक दिन विशुद्ध भगवत्सेवा करने की योग्यता प्राप्त हो जाय—परा भक्ति उदित हो जाय। भगवद्गीता में ही अन्यत्र कहा है: **यतः प्रवृत्तिर्भूतानाम्**। यदि कोई सब के परम कारण के लिए कर्मफलत्याग करे, पर यह न जानता हो कि श्रीकृष्ण ही परम कारण हैं, तो फलत्याग रूपी यज्ञ करने से उसे शनैः-शनैः इस सत्य की अनुभूति हो जायगी।

**श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।**
**ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।।१२।।**

**श्रेयः**=श्रेष्ठ है; **हि**=निस्सन्देह; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **अभ्यासात्**=अभ्यास से; **ज्ञानात्**=